चम्पूकाव्यः परिभाषा एवं स्वरूप

राजेन्द्र प्रसाद मिश्रा
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
Email: rajendram423@gmail.com

गद्य-पद्यमयी रचना वैदिक काल से ही होती रही है। संहिताएं, ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद्, महाभारत, विष्णुपुराण और भागवत पुराण, जातककथा, शिलालेख आदि सबमें इस शैली के दर्शन होते हैं। तथापि ऐसी मिश्र रचना, जिसे सर्वांग चम्पूकाव्य कहा जा सके, दसवीं ई. शती से पूर्व उपलब्ध नहीं होती है।

'चम्पू' शब्द चुरादिगण की चपि (चम्प्) धातु से औणादिक उन् प्रत्यय करने पर और ऊङ् आदेश करने पर बनता है। 'चम्पयति ' अर्थात् सहैव गमयति प्रयोजयति गद्यपद्ये इति चम्पूः अर्थात् जिस रचना में गद्य और पद्य का समान भाव से तथा सहयोगपूर्वक प्रयोग किया जाता है, उसे चम्पू कहते हैं। हरिदास भट्टाचार्य का कथन है कि :-**चमत्कृत्य पुनाति, सहृदयान् विस्मयीकृत्य प्रसादयति, इति चम्पूः।** अर्थात् सहृदयों के हृदय को चमत्कृत करके पवित्र करने वाला एवं विस्मित करके प्रसन्न करने वाला काव्य-विशेष चम्पू कहलाता है। इनके अनुसार चम्पू में शब्द –चमत्कार और अर्थ- प्रसाद गुण होना चाहिए। चम्पू में वर्णनात्मक अंश के लिए गद्य का प्रयोग होता है और अर्थगौरव वाले अंशों के लिए पद्य का प्रयोग किया जाता है।

सर्वप्रथम चम्पूकाव्य की परिभाषा को प्रस्तुत करते हुए आचार्य दण्डी ने लिखा है कि-

गद्यपद्यमयीकाचिच्चम्पूरित्यभिधियते॥ [1]

एक गद्यपद्यमयी काव्यरचना चम्पू भी कहलाती है। अग्निपुराणकार महर्षि वेदव्यास ने ख्यात और प्रकीर्ण दो मिश्रकाव्य के भेद स्वीकार किये है।[2] १०१० से १०५५ ई. सन् के लाक्षणिककार एवं चम्पूकार भोज ने दण्डी की परिभाषा में उच्छवास को सम्मिलित कर चम्पू को आख्यायिका के समान माना है।[3] १२वीं शताब्दी के चालुक्य वंशीय राजा सोमेश्वर का कथन है।[4] १४वीं शताब्दी के आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में गद्य-पद्य से युक्त काव्य को चम्पू की संज्ञा दी है।[5] गद्य-पद्य

---

[1] काव्यादर्श १/१

[2] मिश्रं वपुरिति ख्यातं प्रकीर्णमिति च द्विधा अ.पु. ३३७/३८.

[3] याऽऽ ख्यायिकेव सौच्छवासा दिव्यगद्यपद्यमयी। सा दमयन्ती वासवदत्तादिरिहोच्यते चम्पूः। शृंगारप्रकाश. ए.एम.ओ.सी.एल.-चम्पू की परिभाषा में उद्धृत।

[3] जी.चं.१/९

[4]गद्यैः पद्यैः समायुक्तामेतद्वर्णनकैर्युतम्। चम्पूनाम्ना समाख्यातां शुश्रूषेत महीपतीः।। मानसोल्लास या अभिलषितार्थचिन्तामणि। पृ.सं. १८३ ए.एम.ओ.सी.एल.-चम्पू की परिभाषा में उद्धृत।

[5] गद्यपद्यमयंकाव्यंचम्पूरित्यभिधीयते।। सा.द.६/३३६

©Indira Gandhi National Open University

मिश्रित श्रव्यकाव्य तो चम्पू से अतिरिक्त भी दृष्टिगोचर होते हैं, जैसे- विरुद,[6] करम्भक [7] आदि। अतः चम्पू में कोई अन्य भी भेदक तत्त्व होना चाहिए। हेमचन्द्र और वाग्भट्ट ने मिश्रशैली के अतिरिक्त चम्पूकाव्य – शरीर में सांक और सोच्छ्वास विशेषताएँ भी जोड दी है। तदनुसार- गद्यपद्यमयी सांका सोच्छ्वासा चम्पूः।[8] १६वीं शताब्दी के उत्तरार्ध एवं १७वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के श्रीकृष्ण कवि ने चम्पू को[9] तथा १९ वीं शताब्दी के अलंकारशास्त्री कान्तिचन्द्र विद्यारत्न भट्टाचार्य ने भी आचार्य दण्डी के मत का ही अनुसरण किया है।[10] डॉ. सूर्यकान्त द्वारा सम्पादित नृसिंहचम्पू की भूमिका में अज्ञातकर्तृक किसी विद्वान् ने चम्पूकाव्य के विषय में कहा है कि जिसमें उक्ति और प्रत्युक्ति तथा जो विष्कम्भ शून्य हो ऐसी गद्यपद्यमयता चम्पूकाव्य कहलाती है-

गद्यपद्यमयी सांका सोच्छ्वासा कविगुम्फिता।

उक्तिप्रत्युक्तिविष्कुम्भशून्या चम्पूरुदाहृताः॥ [11]

त्रिविक्रम भट्ट उदात्त गुणों से युक्त गद्य-पद्य रचना को चम्पू कहते है।[12] गद्य-पद्य मिश्रित चम्पूकाव्य का प्रणयन कवियों को क्यों रुचिकर लगा, एतदर्थ जीवनधरचम्पू के प्रणेता कवि हरिशचन्द्र एवं रामायणचम्पू के रचयिता महाकवि भोज की निम्न पङ्क्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

गद्यावली पद्यपरम्परया च प्रत्येकमप्या वहति प्रमोदम्।

हर्षप्रकर्षं तनुते मिलित्वा द्राग्बाल्यतारुण्यवतीव कन्या॥ [13]

गद्यानुबन्धरसमिश्रितपद्यसूक्ति र्हृद्या हि वाद्यकलया कलितेव गीतिः।

तस्मात् दधातु कविमार्गजुषां सुखाय चम्पूप्रबन्धरचनां रसना मदीया ॥ [14]

जीवन्धरचम्पू के रचयिता 'हरिश्चन्द्र' चम्पूकाव्य को बाल्य तथा तारुण्य से सम्पन्न किशोरी कन्या के समान अधिक रसोत्पादक स्वीकार करते हैं। तथा भोजराज ने गद्य- समन्वित पद्य सूक्ति को वाद्ययन्त्र के समान ही हृदयाकर्षक माना है। अर्हदास चम्पू को कमल का रूपक मानते है।[15] वेंकटेश माधुर्य मण्डित श्लेष युक्त गद्यपद्य रचना को चम्पू स्वीकार करते

---

[6] गद्यपद्यमयी राजस्तुतिर्विरुदमुच्यते॥ सा.द.६/३३७

[7] करम्भकं तु भाषाभिर्विविधाभिर्विनिर्मितम्॥ सा.द.६/३३७

[8] काव्यानुशासन८/९, काव्यालंकार,वाग्भट्ट. अ.१

[9] मं. म. च.११, पृ.सं..१८६.

[10] गद्यपद्यमयं मिश्रं चम्पूरित्यभिधियते।काव्यदीपिका.४,पृ.सं. ७६.

[11] नलचम्पूः-पं श्री रामनाथ त्रिपाठी शास्त्री,पृ.सं. १४

[12] उदात्तनायकोपेता गुणवद्वृत्तमुक्तका । चम्पूश्च हारयष्टिश्च कैन न क्रियते हृदि॥न.च.१/२५.

[13] जी.चं.१/९

[14] चं.रा. बा. का.३

[15] उल्लासितेन शारदा पुरुदेवभवत्यायचम्पुदम्भजलजेन समुज्जृम्भे।पु.च.प्र.प्रशस्तिपद्यम्१,पृ.सं. ३७४

©Indira Gandhi National Open University

है।[16] चक्रकवि निर्दोष पद्य, हृदयंगम गद्य, व्यंग्य प्रधान तथा सरस्वती के जयशंख के रूप में चम्पू को मानते है।[17] विश्वगुणादर्श चम्पू के रचयिता वेंकटाध्वरी ने मधु और द्राक्षा के संयोग के समान मधुमय चम्पूकाव्य को माना है, तदनुसार-

पद्यं यद्यपि विद्यते बहुसतां द्वयं विगद्यं न तत् गद्यं च प्रतिपद्यते न विजहत्पद्यं बुधास्वाद्यताम्।

आदन्ते हितयोः प्रयोग उभयोरामोदभूमोदयंसंगः कस्य हि न स्वदेत मनसे माध्वीकमृद्वीकयोः॥[18]

चम्पूकार शरभोजी का मन्तव्य है कि पद्य सुन्दर होने पर भी गद्य के बिना हृदयावर्जक नहीं होता है, इसी प्रकार पद्य रहित गद्य भी आनन्दप्रद नहीं होता है। इन दोनों से समन्वित साहित्य ही सुधा माद्वीक के मिश्रण की भांति साहित्य विद्या विचक्षण सहृदयों के हृदय कमल को विकसित करता है।[19] आधुनिक चम्पूकार पं दिलीपदत्तोपाध्याय दोष रहित पद्य एवं गद्य के मिश्रण को चम्पू मानते हैं।[20] चम्पूसाहित्य के समीक्षक डॉ. छवि नाथ त्रिपाठी ने चम्पू की परिभाषा को स्पष्ट करते हुए कहा है कि-

गद्यपद्यमयं श्रव्यं सम्बन्धं बहुवर्णितम।

सालङ्कृतं रसैः सिक्तं चम्पुकाव्यमुदाहृतम्॥[21]

अभिराजराजेन्द्र मिश्र ने अपने अभिराजयशोभूषणम् में चम्पूकाव्य तथा नाटक एवं कथादि से उसकी भिन्नता को प्रस्तुत करते हुए कहा है कि- गद्य तथा पद्य शैलियों के विशिष्टकोटिक मिश्रण के कारण जिसे मिश्रकाव्य कहा गया है उसी काव्य-भेद को कुछेक आचार्य चम्पूकाव्य भी कहते है।[22] और इस चम्पू में गद्य तथा पद्य का मिश्रण सहज होता है उसमें से किसी भी एक के प्रयोग में कवि का दुराग्रह नहीं होता है-

मिश्रणं किन्तु चम्प्वां तत्सहजं गद्यपद्ययोः।

तयोरेकतरस्यापि प्रयोगे न दुराग्रहः॥[23]

अपनी बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए मिश्र जी कहते है कि जैसे कोई राहगीर , मन – मुताबिक मार्ग तय करता हुआ किसी वृक्ष की छाया में स्वेच्छया सुस्ताने लगता है और सुस्ता कर पुनः चलने लगता है; यहाँ सुस्ताने या चलने में प्रमाण

---

[16] वेंक का श्री नि. वि. चं.५/२४ पृ.सं. १७२

[17] एष……. पद्यैरतिहृद्यैर्गयेश्च निरन्तरन्तरङ्गितध्वनिः शारदाजयकम्बुद्रोपदीपरिण्यचम्बूः।द्रौ.प.चं.पृ.सं.४.

[18] वि.चं.१/४

[19] पद्यं हृद्यमपीह लोलके धत्ते न हृदयास्पदं गद्यं पद्यविवर्जितं च भजते नास्वाद्यतां मानसे।

साहित्यं हि तयोर्द्वयोरपि सुधामाध्वीकयोर्योगवत् सन्तोषं हृदयाम्बुजे बवितनुते साहित्यविद्याविदाम् ॥ कुमारसम्भवचम्पू.१/६.

[20] श्री प्र. च.१/२२.

[21] चं.का. का आ.एवं ऐतिहासिक अध्य. पृ.सं. ४९.

[22] अभिराजयशोभूषणम्,४/१२४

[23] अभिराजयशोभूषणम्,४/१३२

©Indira Gandhi National Open University

और कारण उसकी अपनी पसन्द ही होती है उसमें न कोई पूर्वाग्रह होता है और न ही कोई विलक्षण लक्ष्य। इसी प्रकार चम्पूकाव्य में भी रचनाकार अपनी रुचि से ही कभी गद्य का तो कभी पद्य का यथोचित मात्रा में तथा बारी-बारी से वर्णन करता है। इस प्रकार चम्पूकाव्य में गद्य-पद्य का मिश्रण पूर्णतः स्वभाविक होता है वस्तुतः गद्य-पद्य का यह मिश्रण ही चम्पूकाव्य की प्रकृति है।[24]

कोशकारों ने भी चम्पू के विषय में कोई विशेष उल्लेख नहीं किया है। वाचस्पत्यम् में[25], शब्दकल्पद्रुम में [26], श्री मोनियर विलियम्स [27] तथा शिवराम आप्टे [28] ने भी गद्य-पद्य के मिश्रण को चम्पू की संज्ञा दी है।

यदि इतिहासकारों की चर्चा करें तो इन्होनें चम्पू-साहित्य के बाह्य एवं आन्तरिक विशेषताओं को प्रतिपादित करके गद्यपद्यात्मक शैली को ही चम्पूकाव्य की संज्ञा दी है। संस्कृतसाहित्य के सुप्रसिद्ध इतिहासकार आचार्य बलदेव उपाध्याय ने चम्पूकाव्य को मिश्रकाव्य का ही अभिधान माना है जिसमें गद्य और पद्य का मिश्रण होता है। उनका कथन है कि "गद्य की यहाँ भी वही शैली है, जो गद्यकाव्यों में प्रस्तुत की गई है। चम्पूकाव्य गद्यकाव्य का ही प्रकारान्तर से उपबृंहण प्रतीत होता है"।[29] डॉ. भोलाशंकर व्यास ने चम्पू के विषय में अपना विचार रखते हुए कहा है कि " धीरे- धीरे गद्यकाव्यों में पद्यों की छौंक बढती गयी और बाद के चम्पूकाव्यों में तो पद्यों का कलेवर गद्यभाग से भी अधिक हो गया। चम्पूकाव्यों का सम्बन्ध जितना शैली से है, उतना विषय से नहीं । चम्पू का विषय - प्रणयकथा, पौराणिक इतिवृत्त या मिश्रित इतिवृत्त कुछ भी हो सकता है। साथ ही चम्पू के लिए आवश्यक नहीं कि उसका अंगीरस शृंगार ही हो, वह वीर भी हो सकता है। चम्पू, काव्यों की वह शैली है, जिसमें एक साथ गद्य और पद्य का प्रयोग पाया जाता है । कवि अपनी इच्छा के अनुसार कथा के कुछ भाग को पद्य में कहता है तथा उसके बीच-बीच के कई भागों को पद्य से सजा देता है।"[30] आचार्य राधाबल्लभ त्रिपाठी ने अपने ग्रन्थ संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास में चम्पू के विषय में उपर्युक्त सन्दर्भ१४ को प्रस्तुत करते हुए कहा है कि "रूपक में से उक्ति-प्रत्युक्ति या संवादों की शैली को हटा दिया जाए , तो चम्पू काव्य बन जाता है। इस प्रकार चम्पूकाव्य वास्तव में वैदिक काल से चली आ रही आख्यान और उपाख्यान की शैली का पुनराविष्कार है"।[31]

ए.बी. कीथ के विचार में चम्पूकार गद्य एवं पद्य का प्रयोग एक ही उद्देश्य हेतु निरपेक्षभाव से करते हैं। [32] सी. कुन्हनराज के विचार में शास्त्रीय परिभाषा प्राप्त पद्य और गद्य का समानुपातिक मिश्रण, जो संस्कृत साहित्य की विशिष्ट शैली में

---

[24]अभिराजयशोभूषणम्, ४/१३३-१३६

[25] चम्पूः स्त्री, चपि ऊ। वाच.भा.४, पृ.सं. २८९६

[26] चम्पूः स्त्री, । शब्दकल्पद्रुम एप.श्रुति झा.

[27] 'A kind of elaborate composition in which the same subject is continued through alternations in prose and verse.लघु.चं.; एक साहित्यक अध्ययन पृ.सं. २४.

[28] चम्पूः (स्त्री) चम्पू+ऊ ,संस्कृत हिन्दी.कोश. पृ.सं. ३७३

[29] सं. सा. का इति.पृ.सं.४४६

[30] संस्कृत कवि दर्शन पृ.सं. ५१६-१७.

[31] संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास.पृ.सं. ४०८-९

[32] बीरपाल सिंह संस्कृत साहित्य एवं चम्पू काव्य,SRJIS .Nov-December,2014.vol-II/XV, p. 2570.

©Indira Gandhi National Open University

विकसित हुआ 'चम्पू' है।[33] एस. एन.दास गुप्त,[34] एम. कृष्णमाचारियर,[35] गौरीनाथशास्त्री[36], श्री कृष्ण चैतन्य,[37] एम्. विन्टरनिट्ज [38] विद्वानों ने गद्य-पद्य के मिश्रित स्वरूप को ही चम्पू का मूल आधार स्वीकार किया है।

गद्य-पद्य के मिश्ररूप का वर्णन अन्यत्र भी प्राप्त होता है अभिराजराजेन्द्र मिश्र ने पूर्वाचार्यों के मत को स्वीकार करते हुए चम्पूकाव्य को दो भागों में विभक्त किया है उनका मत है कि प्रबन्ध और मुक्तक के भेदों से चम्पू भी दो प्रकार की होती है उनमें प्रबन्धात्मक चम्पूकाव्य यथा-नलचम्पू, मदालसाचम्पू, यशस्तिलकचम्पू आदि है तथा मुक्तक कोटि के चम्पूकाव्य यथा-करम्भक, विरुद और जयघोषणा हैं।[39] यहाँ चम्पूकाव्य मिश्रशैली का प्रबन्ध रूप है तो विरुद,करम्भक आदि मिश्र शैली के मुक्तक रूप है इन विधाओं के अध्ययन व विश्लेषण से ज्ञात होता है कि विरुद आदि चम्पुओं से भिन्न होते हुए भी ये चम्पूओं के अङ्ग माने जा सकते हैं।

कथावस्तु के आधार पर चम्पूकाव्य तीन प्रकार के उपलब्ध होते हैं प्रथम वे हैं, जिनमें कथावस्तु आद्योपान्त निरन्तर चलती रहती है, जैसे- नलचम्पू,चम्पूभारतम् आदि। द्वितीय प्रकार के वे हैं जिनमें कथावस्तु को भूमिका तथा उपसंहारक के रूप में रखा जाता है और मध्य में विशिष्ट स्थलों में दृश्यों का बृहद वर्णन होता है यथा-विश्वगुणादर्शचम्पू। तृतीय प्रकार के वे हैं, जो मिश्र शैली में रचित तो हैं परन्तु उनमें कथावस्तु का अभाव है; ये दो प्रकार के हैं जिसमें कुक्केसुब्रह्मण्य शास्त्री विरचित सारावतीजलप्रपातवर्णनचम्पू वर्णनात्मक है तथा तत्त्वगुणादर्शचम्पू एवं मन्दारमरन्दचम्पू आदि विचार प्रधान हैं।

चम्पूकाव्यों में आधार की दृष्टि से भी समता नहीं है क्योंकि राम वर्मा कृत स्यानन्दूरपूरवर्णनचम्पू एक ही परिच्छेद में वर्णित है तथा आनन्दवृन्दावनचम्पू २२ स्तबकों में रचित है।[40] चम्पूकाव्यों में गद्य-पद्य की मात्रा भी निश्चित नहीं मिलती है जैसे नलचम्पू में गद्यभाग अधिक है तो चम्पूरामायण,चम्पूभारतम् में पद्यभाग का प्रयोग अधिक दिखाई देता है एवं वीरभद्रचम्पू में गद्यपद्य दोनों समान मात्रा में प्राप्त होते हैं।

उपसंहार-

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह ज्ञात होता है कि गद्य और पद्य अपने अलग अलग वैशिष्ट्यों से युक्त हुआ करते है। इन दोनों का अस्तित्व पृथक् - पृथक् देखा जा सकता है परन्तु चम्पू गद्यकाव्य का कोई विशेष भेद न होकर गद्यपद्योभय-मिश्र एक विशेष प्रकार का काव्य है। इसमें गद्य का अर्थगौरव पद्यों के लयात्मक सौन्दर्य से समवेत होकर एक अलग ही छटा को धारण करता है। गद्य और पद्य में से किसी एक की प्रधानता चम्पूकाव्य में नहीं रहती है और न ही इसका निर्णयधारण

---

[33] बीरपाल सिंह संस्कृत साहित्य एवं चम्पू काव्य,SRJIS .Nov-December,2014.vol-II/XV, p. 2570.

[34] Though the term Champo is of obscure origin,(i.31)it asa already used by Dandin in his Kavyadarsa to denote a species of Kavya in mixed verse and prose(Gadyapadyamayi),ल.चं.काःएक साहित्यिक अध्ययन,पृ. २५

[35] 'A narrative in mixed prose and verse has been called Champu',H.C.S.L.p.496.

[36] 'Composition in mixed prose and verse in Sanskrit is called Champu' , A.C.H.C.S.L.Vol.I,p.139

[37] 'The Champu isa tale narrated inmixed prose and verse', ल.चं.काःएक साहित्यिक अध्ययन,पृ.सं. २५

[38] H.I.L.vol.3,pt.I,pp.413-14

[39] अभिराजयशोभूषणम्.पृ.सं. २४५-२४६

[40] नल.चं में अ.यो. पृ.सं. १०.

©Indira Gandhi National Open University

होता है कि कितने अंश में गद्य भाग को रखना है तथा कितने अंश में पद्य भाग को ग्रहण करना है। यहाँ कवि अपनी आवश्यता के अनुरूप प्रसंग,घटना या वर्णन के अनुकूल गद्य और पद्य का प्रयोग करता है। अतः इस प्रकार चम्पूकाव्य वह रचना है जिससे द्विविध चमत्कार उत्पन्न हो जाता है।

संदर्भग्रन्थसूची-

१. विश्वनाथ, साहित्यदर्पण, व्या.शेषराजशर्मा रेग्मी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, २०१३

२. दण्डी, काव्यादर्श, व्या. रामचन्द्र मिश्र, चौखम्बा विद्या भवन.वाराणसी, १९५७

३. हरिश्चन्द्र, जीवन्धरचम्पू, पण्डीत पन्नालाल जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, १९५८

४. भोज, चम्पूरामायण, व्या. पण्डित रामनाथत्रिपाठी शास्त्री, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, २०१६

५. चक्रकवि, द्रौपदीपरिणय चम्पू, श्रीवाणीविलास प्रेस, श्रीरंगम, श्रीवाणीविलास संस्कृत सीरीज न.१७ में प्रकाशित

६. विश्वगुणादर्शचम्पू, वेंकटाध्वरी, संपा. प्रो.सूर्यकान्त शास्त्री, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, १९६३

७. मिश्र, अभिराज राजेन्द्र, अभिराजयशोभूषणम्, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, २००६

८. उपध्याय, बलदेव, संस्कृत साहित्य का इतिहास, शान्तिनिकेतन, वाराणसी, २००८

९. त्रिपाठी, छविनाथ, चम्पूकाव्य का आलोचनात्मक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, चौखम्बा विद्याभवन, १९६५

१०.त्रिपाठी, राधावल्लभ, संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, २००७

११.डॉ मैत्रेयी, नलचम्पू में अलंकार- योजना, गुरुकुल वृन्दावन स्नातक शोधसंस्थान, २००७

१२.डॉ. शास्त्री, राजेन्द्र , लघु चम्पूकाव्यः एक साहित्यिक अध्ययन, दीपू प्रकाशन, दिल्ली, २००२

१३. History of Classical Sanskrit Literature, M.Krishnamacharier, Moti Lal Banarasi Das, 1974

१४. History of Indian Literature, M.Winternitz, Vol.III, Pt.I, Moti Lal Banarasi Das, Delhi, 1963

©Indira Gandhi National Open University